डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2006-2008
आर. एन. आई - राजहिन /2003/9899
प्रकाशन दिनांक : 4 अगस्त - 2007 . मूल्य : पाँच रुपये

अजायब बानी

(गुरु महिमा)

वर्ष - पाँच | अंक - चौथा | अगस्त- 2007 | मासिक पत्रिका

दाता जी कित्थे गयों 2

एक शब्द

मौत पैदाइश 3

महात्मा चरनदास जी की बानी
सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

ख्वाहिशें 23

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब
16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

पवित्र जीवन 30

परम सन्त अजायब सिंह महाराज जी द्वारा
गुफा दर्शनों के समय एक महत्त्वपूर्ण सन्देश
16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर; 1027 अग्रसेन नगर श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

उप सम्पादक : नंदिनी **विशेष सलाहकार** : गुरमेल सिंह नौरिया

सहयोग : रेणु सचदेव, राजेश कुक्कड़ व परमजीत सिंह

सन्त बानी आश्रम : 16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)

Phone : 0154-246 4601 **Mobile :** 94144 - 80303

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in **Website :** www.ajaibbani.org

दाता जी कित्थे गयों

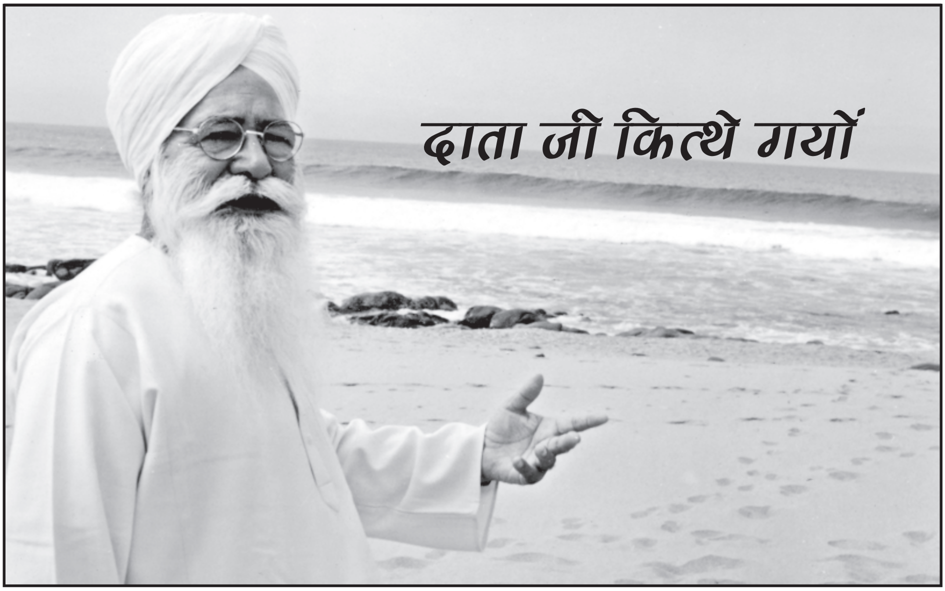

दाता जी कित्थे गयों, प्रीतमा वे कित्थे गयों। (2)

1. हत्थी अपनी बाग सजाके,
आपे तूं ऐह बूटे लाके, (2)
नहीं सी छड़ जाणा सानूं, मालिया वे,
कित्थे गयों.....

2. पता जे हुंदा नाल ही जांदे,
कानू ऐडे दुःखड़े उठांदे, (2)
जे चिर लोंणा सी, रखवालिया वे,
कित्थे गयों.....

3. हुंण तां डोले जग दा बेड़ा,
बन्ने लावे होर हुण केड़ा, (2)
तेरे बाजो कौंण बचावे, खुशहालिया वे,
कित्थे गयों.....

4. सुंण फरियाद 'अजायब' दी आवीं,
आके दुःखियां दा दर्द मिटावीं, (2)
सोहणा आके दर्श दिखा जा, संगत देया वालिया वे,
कित्थे गयों.....

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

मौत–पैदाइश

महात्मा चरनदास जी की बानी

16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है। जिन्होंने रहम करके हम रोते-चिल्लाते हुए जीवों को अपने घर का संदेश दिया और कहा, ''प्यारे बच्चो! आप मुझे पराया न समझें, मैं आपका अपना ही हूँ। आप जिस शरीर में बैठकर मान कर रहे हैं यह शरीर एक किराए का मकान है, यह आपका साथ नहीं देगा। परमात्मा ने जिस काम के लिए यह शरीर दिया है, इस शरीर के रहते हुए ही आपको वह काम कर लेना चाहिए।''

आपका घर सच्चखंड है, आखिर आपने वहीं जाना है। हमारी आत्मा आदि से काल के देश में आई। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

खंड पाताल दीप सब लोआ, काले वस आप प्रभ कीआ।

परमात्मा ने दुनिया की रचना करके इसका इंतजाम काल के हवाले कर दिया। काल की रचना **मौत-पैदाइश** है। पैदाइश होने पर लड्डू बाँटते हैं; खुश होते हैं। उसी घर में मौत होने पर रोते-चिल्लाते हैं।

सन्त-महात्मा इस संसार की असलियत समझाते हैं, ''हम भूले हुए हैं कि हमें दुनिया के पदार्थों से शान्ति मिलेगी और धन-दौलत से सुख मिलेगा। माँगने से दुनिया के पदार्थ मिल जाते हैं। बेटा माँगा मिल गया। बेटी माँगी मिल गई। धन-दौलत माँगा मिल गया। परमात्मा बेअन्त भंडार का मालिक है। परमात्मा देते-देते नहीं थकता लेकिन हम लेते-लेते थक जाते हैं। हम जो चीज़ें माँगते हैं उनके मिलने पर जितनी ख़ुशी होती है उनके छिन जाने पर उतना ही दुःख होता है। यह संसार एक वृक्ष की छाया की तरह है। वृक्ष की छाया न किसी के हाथ लगी है न लग ही सकती है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

गोयल आया गोयली जैसे संसारा, कूड़ कमावे आदमी बाँधे घर बारा॥

जिस तरह अकाल पड़ने पर चरवाहे अपने पशुओं को लेकर दूसरी जगह चले जाते हैं। पहले यहाँ भी ऐसा ही होता था कि अकाल पड़ने पर यहाँ के लोग पंजाब चले जाते थे। वहाँ उनके पशुओं को खाना-दाना मिल जाता था लेकिन वहाँ जाकर वे पक्के मकान नहीं बनाते थे क्योंकि वहाँ उनकी कोई जायदाद नहीं होती। वहाँ के लोग उन पर तरस खाकर कुछ समय रहने के लिए उन्हें थोड़ी जगह दे देते थे लेकिन उन लोगों का ख्याल अपने देश की तरफ ही रहता था कि कब बारिश हो और हम वापिस अपने घर जाएं। भक्त नामदेव जी कहते हैंः

गहरी करके नींव खुदाई, ऊपर मंडप सजाए।
मार्कण्डेय ते को अधिकाई, जिन तिल धर मूंड मुंडाए॥
मेरी मेरी कौरव करदे, दुर्योधन से भाई।
बारह योजन छत्र चढ़ाया, देही गरज न खाई॥
सरव सोने की लंका होती, रावण से अधिकाई।
कहाँ भए दर बांध्ये हाथी, खिन्न में भई पराई।

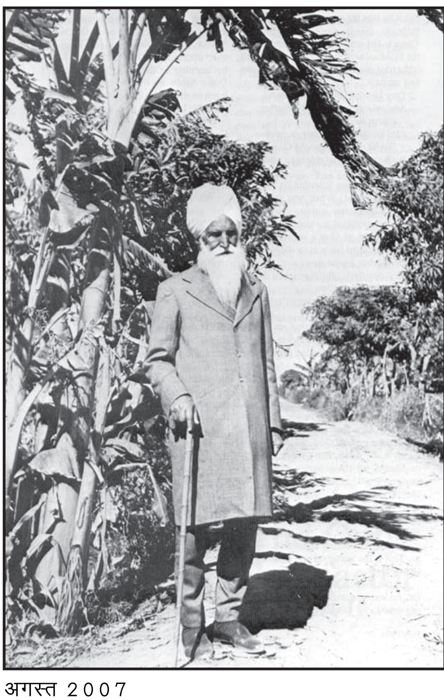

हम यहाँ आए ही एक मुसाफिर की तरह हैं। हम यहाँ बहुत गहरी नींवे खुदवाकर पक्के मकान बनवाते हैं, सोचते हैं! शायद हम इनमें सदा ही रहेंगे। अब कौरव-पांडव कहाँ हैं जिनके पास इतना बड़ा राज्य था, इतना लाम-लश्कर था।

इस दुनिया में महात्मा मार्कण्डेय लम्बी उम्र के हुए हैं। उन्होंने सारी उम्र एक झोपड़ी में ही गुजारा किया। बहुत से लोग आपसे कहते कि आप कोई महल क्यों नहीं बनवा लेते? महात्मा मार्कण्डेय जवाब देते,

''प्यारेयो! हमने यहाँ सदा नहीं रहना, पता नहीं कब बिस्तर झाड़कर चले जाना है? हमारे श्वास हर घड़ी कम हो रहे हैं; हम मौत के नजदीक हो रहे हैं।'' कबीर साहब कहते हैं:

ऐसा संगी कोई नहीं, जैसी सगी देह।
मरती वरया रे नरा, डार चला जो खेह॥

देह जितना कोई भी सगा नहीं है। सारी जिंदगी हम इस प्यारी देह को पालते-पोसते हैं, इसे नहलाते हैं; इस पर अच्छे-अच्छे तेल लगाते हैं लेकिन जाते समय इस देह को ऐसे छोड़कर चले जाते हैं जैसे मुँह में रेत डाला जाता है। वही समझदार है जो श्वासों की पूँजी रहते हुए ही उस मकसद को पूरा कर ले जिस मकसद के लिए परमात्मा ने जन्म दिया है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

नर घाले सब दिनस रात, घटे न बढ़े तिल सार।
जीवन लोड़े भ्रम मोह, नानक ते गवार॥

हर एक के अंदर गिनती के श्वास डाले जाते हैं इसमें न एक श्वास घटता है और न एक श्वास बढ़ता है लेकिन हम लोग भ्रम में हैं।

मुझे महाराज सावन सिंह जी के नामलेवा शान्ति चोपड़ा की हकीकत याद है। शान्ति चोपड़ा का विचार हुआ कि मैं कुछ समय बाबा जी के पास रहूँ। एक दिन सुबह मैं उनके घर गया। उसकी पत्नी ने खुश होकर अपने पति के पैरों पर मत्था टेका कि मेरा पति भजन-सिमरन करके अपना जीवन सफल बनाने के लिए जा रहा है। उसकी पत्नी ने मुझे नमस्कार किया और लंगर के लिए कुछ माया भी देनी चाही।

मैंने अपनी जिंदगी में ऐसी बहादुर औरतें बहुत कम देखी हैं जो अपने पति को परमात्मा समझकर नमस्कार करती हैं। मैंने उसकी पत्नी को प्यार से कहा, ''प्यारी बच्ची! मैंने ऐसी औरतें बहुत कम देखी हैं आज मेरा दिल बहुत खुश है।'' शान्ति चोपड़ा कई साल मेरे पास रहा। जिंदगी में ऐसी भी कई बातें होती हैं कि हम जिसके पास रहते हैं

उसे खुश कर लेते हैं। साधुओं को खुश करना कोई खास मुश्किल नहीं होता, हम अपने आपको सुधारकर साधुओं को खुश कर लेते हैं।

सन्तमत यह नहीं कि हम सतसंग में गए और चक्कर काटकर चले आए। जैसे मन्दिर, गुरुद्वारे में जाकर चक्कर लगा आए लेकिन हमारे अंदर वही काम, क्रोध, लोभ और निन्दा वगैरह है तो इनमें जाने का क्या फायदा है? अगर हम सतसंग में जाकर जो कुछ सुनते हैं उसे वहीं छोड़कर चले आएं, घर आकर लड़ाई-झगड़ा करें और बुराई न छोड़ें तो सतसंग में जाने का क्या फायदा? सतसंग में जाने का तभी फायदा है अगर हम महात्मा के कहे मुताबिक अपने जीवन को ढालें।

मेरी आँख का ऑपरेशन हुआ। शान्ति चोपड़ा रोज मेरे दर्शन करना चाहता था। डाक्टर ने बहुत सख्त परहेज बताया हुआ था तो मैंने उसे दर्शनों के लिए मना किया। उसने कहा, ''मैं मकान को ही मत्था टेककर चला जाऊँगा।'' मैं वहाँ रेस्ट हाऊस में चालीस दिन रहा। वह रोज उस मकान को ही मत्था टेककर चला जाता था। मैं उससे बहुत खुश हुआ।

एक दिन शान्ति चोपड़ा ने मुझसे कहा, ''मुझे खुशी होगी अगर मेरे अन्त समय में आप मेरे पास हों।'' मैंने हँसकर कहा, ''यह कैसे हो सकता है? दिल्ली और राजस्थान का 535 किलोमीटर का फासला है।'' जब उसका अन्त समय आया उस समय हालांकि मुझे दो दिन बाद दिल्ली जाना था लेकिन परमात्मा सावन-कृपाल ने मेरे दिल में इतनी दया भरी कि मैं उसके बिना बुलाए ही दो दिन पहले दिल्ली चला गया।

उसका आखिरी समय था। मैंने उससे हँसकर कहा, ''शान्ति! मैं तेरे प्यार से बंधा हुआ यहाँ आ गया हूँ।'' वह मुझसे दिल खोलकर बातें करना चाहता था लेकिन उसका लड़का बीच में बाधा बन रहा था। अभी उसके जाने में कुछ दिन बाकी थे। मैंने ओबराय साहब की ड्यूटी लगाई कि मैं अमेरिका जा रहा हूँ आप इसके पास आते रहना।

हम भजन बोलते हैं: *सावन केड़ियां रंगा विच राजी, मैं की जांणा सार सावन दी*। आखिरी समय में उसने यह भजन बोलकर अपना साँस

पूरा किया, ''शान्ति दुःखिया हो जाए राजी।'' मेरा कहने का भाव है कि हम इस तरह अपना जीवन सफल कर लेते हैं। जिस मकसद के लिए परमात्मा ने हमें जन्म दिया है अगर हमने वह कर लिया तो हमारा इस देह में आना सफल है। कबीर साहब कहते हैं:

गुरु बेचारा क्या करे, जे सिखन्न में चूक।
अंधे एक न लग्गी, ज्यों बाँस बजाई फूँक॥

इसमें गुरु का क्या दोष है अगर हम गुरु की बात को सुनकर अनसुना कर दें? सन्तमत का कायदा है कि हम सतसंग में जो सुनते हैं उस पर अमल करें। सन्त-महात्मा कहते हैं, ''दुनिया में आपको ऐसा कोई आदमी नहीं मिलेगा जिसको सदा सुख ही सुख मिले हों या जिसने सदा दुःख ही दुःख देखे हों। ये सुख आरज़ी होते हैं पता नहीं कब दुःखों में तबदील हो जाएं!''

सन् 1947 में भारत आज़ाद हुआ। उस समय हमारी आर्मी को प्रधानमंत्री को सलामी देने का मौका मिला। मैं उस समय दिल्ली के लालकिले में छह महीने रहा। एक दिन सब फौजियों को छुट्टी दी गई कि इन्हें दिल्ली दिखाई जाए। उस दिन गाइड ने हमें लाल किले का दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास और वे सब जगह दिखाई जो शाहजहाँ ने अपना मन बहलाने के लिए बनवाई थी।

आखिर में गाइड ने जब हमें बताया कि बुढ़ापे में शाहजहाँ को उसके लड़के ने कैद कर लिया। शाहजहाँ ने जेल में ही अपने श्वास पूरे किए। यह कहानी सुनकर मुझे बुखार हो गया कि एक बादशाह को जिंदगी के आखिर में इतना कष्ट सहना पड़ा! गुरु नानक जी कहते हैं:

पाप पुण्य की है यह नगरिया, सो उबरे जो सतगुरु शरणाया॥

हम पाप-पुण्य के नगर में आए हैं अगर हमारे पाप ही पाप होते तो हम नर्क में सड़ रहे होते अगर पुण्य ही पुण्य होते तो हम स्वर्ग में बैठे होते। पाप और पुण्य इकट्ठे हुए तो हमें इंसानी जामा मिला। जैसे

हम टयूवेल लगाते हैं उस समय मिट्टी की तहें बदलती हैं, कभी लाल मिट्टी, कभी चिकनी मिट्टी और कभी एक ही तरह की मिट्टी बहुत दूर तक चली जाती है। इसी तरह पुण्यों का इनाम - हम सुखी नज़र आते हैं, हर तरफ से खुशी के संकेत मिलते हैं। पापों की सजा - शरीर रोगों से ग्रस्त हो जाता है। हर तरफ से दुःख और मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं। किसे दोष दें कर्म तो हमारा अपना ही किया हुआ है। जो सतगुरु की शरण में चला जाता है, 'नाम' जपता है उसका उद्धार हो जाता है।

दृदा दोष न दीजे काहूं, दोष कर्मा आपणया।
जो मैं कीता सो मैं पाया, दोष न दीजे अवरजना॥

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''कर्म करने वाले तो आप खुद ही हैं। जब आपको अपना किया हुआ कर्म ही मिलना है तो आप अच्छे कर्म क्यों नहीं करते?'' गुरु तेगबहादुर जी कहते हैं:

राम गयो रावण गयो, जाको बहो परिवार।
कहो नानक थिर कुछ नहीं, सपने ज्यों संसार॥

रात को हम जो स्वप्न देखते हैं वह बहुत छोटा होता है, हमारी यह जिंदगी भी 50-60 साल का एक स्वप्न ही है।

सुपने सेती चित्त मूर्ख लाया, आरजा गई विहाए, मोहया माया॥

हम मुग्ध गँवार हैं जो स्वप्न को सच मानकर बैठ गए हैं। हम सारी उम्र दुनिया के पदार्थ इकट्ठा करने में लगा देते हैं। हम जो कुछ इन आँखों से देखते हैं यह सब माया का पसारा है। हम सोचते हैं कि लड़का हमारा साथ देगा! लड़की साथ देगी! समाज हमारा साथ देगा!

महात्मा कहते हैं कि जब आपका शरीर भी आपका साथ नहीं देगा तो आप किसकी आशा लगाए बैठे हैं? माता शरीर छोड़ जाती है तो बेटा यतीम बनकर रह जाता है। बेटा चला जाता है तो माता बिलखती रह जाती है। संसार में राम और रावण जैसे भी आए, वे भी नहीं रहे। यहाँ कौन थिर है? आप दुनिया को एक स्वप्न की तरह समझें। जब हमारे प्यारे मित्र साथ छोड़ जाते हैं तो हमारे दिल को सदमा लगता है।

हमारी माता जी एक कहानी सुनाया करती थी। मैं यह तो नहीं कह सकता कि यह कहानी वाक्य ही सच है फिर भी हमें बुजुर्गों की कहानियों से बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

आप कहा करती थीः जब संसार की रचना रची गई उस समय इसके रचयिता ने सोचा! अगर मैंने इस संसार में किसी को बहुत लम्बी आयु दे दी तो वह परमात्मा को याद ही नहीं करेगा। रचयिता ने फिर सोचा! अगर माता चली गई तो बच्चे मर जाएंगे। बच्चे मर गए तो माता नहीं बचेगी। एक गधी और उसका बच्चा कुएं के पास चोगा चुग रहे थे। काल भगवान ने गधी के बच्चे को उठाकर कुएं में फैंक दिया अगर गधी कुएं में छलांग लगा देती तो काल इंसान को ले जाने का कोई और तरीका बनाता। गधी थोड़ी देर कुएं के पास हीं! हीं! करके वापिस आकर चोगा चुगने लगी। यह देखकर काल ने सोचा यही तरीका ठीक है।''

हम लोगों की भी यही हालत है कि जब हमारा कोई साथी साथ छोड़कर चला जाता है तो हम भी चार दिन उस गधी की तरह हीं! हीं! करके फिर वैसे ही हो जाते हैं। कौन किसके साथ जाता है?

बाबा बिशनदास जी एक कहानी सुनाया करते थे कि एक औरत सन्तों की सेवा किया करती थी। उसका बेटा गुजर गया। उस औरत ने सन्त जी से कहा, ''मैं आपकी बहुत सेवा करती हूँ। आप करण-कारण हैं। आप मेरे बेटे को जीवित करें।'' सन्त जी ने हँसकर कहा, ''बेटी! यह मामूली बात है। तू किसी ऐसे घर से पानी लेकर आ जहाँ किसी की मौत न हुई हो।'' वह माता कई घरों में पानी लेने गई। घर के लोगों ने कहा चाहे जितना मर्जी पानी ले जा। उसने उन लोगों से पूछा कभी तुम्हारे घर में कोई मौत तो नहीं हुई? उसे हर घर से यही जवाब मिला कि इस घर में तो बहुत मौतें हुई हैं। वह नगर के घरों से वापिस आकर सन्त जी से बोली, ''महाराज जी! ऐसा कोई घर नहीं है।''

सन्त जी ने कहा, ''बेटी! अगर तुझे कहीं से ऐसा पानी मिल जाता तो मैं अवश्य ही तेरे बेटे को जिन्दा कर देता। फिर सन्त जी ने उसकी

तरफ तवज्जो देकर उपदेश दिया कि यह **मौत-पैदाइश** का संसार है। यहाँ कोई भी सदा थिर नहीं रहता।''

हमारा इतिहास इस बात का गवाह है कि शाह सिकन्दर को बहुत से वर मिले कि तू उस समय शरीर छोड़ेगा जब लोहे की धरती और सोने का आसमान होगा। उसने सोचा न कभी लोहे की धरती होगी और न कभी सोने का आसमान होगा। मैं सदा अमर हूँ। उसने बहुत से मुल्कों पर विजय प्राप्त की। वह दुनिया का विजेता बना। आखिर उसने हिन्दुस्तान पर हमला किया, जब वह वापिस जा रहा था तो शीशतान में उसे मच्छर ने काट लिया और उसे मलेरिया का बुखार हो गया।

पुराने जमाने में तलवार की लड़ाई होती थी। तलवार के वार को रोकने के लिए योद्धा लोग ढाल रखते थे और लोहे का कोट पहनते थे; ताकि अपने आपको तलवार के वार से बचा सकें। राजाओं की ढाल सोने की होती थी। वजीर ने अपना लोहे का कोट नीचे बिछाकर कहा कि बादशाह सलामत! आप यहाँ आराम करें। जब सिकन्दर के मुँह पर धूप आने लगी तो वजीर ने सोने की ढाल उसके ऊपर कर दी।

हमें पता है जब मौत आती है तो मन अंदर से गवाही दे देता है कि अब समय आ गया है। सिकन्दर ने देखा कि धरती लोहे की और आसमान सोने का हो गया है। उसका लाम-लश्कर और डाक्टर-वैद्य भी आ गए। सिकन्दर ने उनसे कहा, ''आप लोग एक बार मुझे मेरी माता से मिलवा दें।'' उन्होंने कहा, ''बादशाह सलामत! ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि आपको बहुत जबरदस्त बुखार है, श्वास भी रुककर आ रहा है।''

सिकन्दर ने कहा, ''जो मुझे मेरी माता से मिलवा देगा, मैं उसे अपना आधा राज्य दे दूँगा।'' वैद्यों ने कहा, ''ऐसा नहीं हो सकता।'' आखिर सिकन्दर ने कहा जो ऐसा कर दे, उसे मैं अपना पूरा राज्य दे दूँगा और खुद माँगकर खा लूँगा। वैद्यों ने कहा एक श्वास भी नहीं बढ़ सकता। जब शाह सिकन्दर को पता लगा कि एक-एक श्वास की इतनी

कीमत है कि इसके बदले कोई राज्य लेने के लिए भी तैयार नहीं लेकिन मैंने तो अपने श्वासों के भंडार को ऐसे ही बर्बाद कर दिया है।

सन्त-महात्मा प्यार से कहते हैं, ''हम इस संसार में जोगियों की तरह चक्कर लगाने आए हैं। जो इस संसार में आकर नाम-सिमरन करके अपना काम पूरा कर लेगा वही यहाँ से कुछ कमाकर ले जाएगा।

महाराज सावन सिंह अपनी जिंदगी का एक वाक्या सुनाया करते थेः एक बार जब हम रावलपिंडी जा रहे थे तो सहारनपुर स्टेशन पर हमें अपना एक पुराना साथी मिल गया जो आर्मी में केन्टीन का ठेकेदार था। वह जबरदस्ती करके हमें अपने घर ले गया। उसने अच्छे-अच्छे खाने बनवाए। घर के अंदर से रोने की आवाज आई तो मैंने उससे पूछा, ''कौन रो रहा है?'' उसने कहा कि आप खाना खाएं। मैंने फिर पूछा, ''घर में से इतनी जोर-जोर से रोने की आवाज आ रही है मैं खाना कैसे खा सकता हूँ?''

उस ठेकेदार ने बताया कि मेरा बेटा मर गया है। मैं उसके फूल चुनकर हरिद्वार से आ रहा था कि आप मुझे स्टेशन पर मिल गए और मैं आपको अपने घर ले आया। घर के अंदर से मेरी पुत्रवधु के रोने की आवाज आ रही है। यह सुनकर मैंने उससे कहा, ''तेरा बेटा मर गया है। तू उसके फूल चुनकर आ रहा है लेकिन तेरे चेहरे पर तो कोई गमीं नहीं दिख रही और तूने इतने अच्छे-अच्छे खाने बनवाए हैं।''

उस ठेकेदार ने बतायाः मरने वाला मुझे सब बताकर गया है कि वह कौन था? आर्मी में एक सिपाही लड़ाई में जाते हुए मेरे पास दो हजार रुपये अमानत के रूप में जमा करवाकर गया कि मैं वापिस आकर अपने पैसे ले लूंगा अगर लड़ाई में मारा गया तो यह पैसा मेरे वारिसों को दे देना। वह सिपाही लड़ाई में मारा गया। उसके वारिसों को सरकार से तो पैसे मिल गए लेकिन उन्हें इन पैसों के बारे में पता नहीं था जो उसने मेरे पास अमानत के तौर पर रखे थे।

मेरी कोई औलाद नहीं थी, कुछ समय बाद मेरे घर में बेटा पैदा हुआ। मैंने उसे बहुत लाड-प्यार से पाला। जब वह बीस साल का हुआ तो मैंने बहुत चाव से उसकी शादी की। शादी के बाद ही वह बीमार हो गया। मैंने उसके इलाज के लिए अच्छे-अच्छे डाक्टर वैद्य बुलाए लेकिन लड़के की बीमारी बढ़ती गई आखिर हर तरफ से निराश होकर किसी के कहने पर एक मुल्ला को बुलवाया। मुल्ला ने उस लड़के के ऊपर मंत्र पढ़ा। उसके बाद लड़का कुछ ठीक लगा। मैंने जेब में हाथ डाला तो उस समय मेरे पास सिर्फ अढ़ाई रुपये ही थे। मैंने मुल्ला से कहा, ''यह किस्मत की बात है कि इस समय मेरे पास सिर्फ अढ़ाई रुपये ही हैं तू ये ले जा। शाम को आकर फिर मंत्र पढ़ना मैं तुझे खुश कर दूँगा।''

मैंने उस लड़के से पूछा, ''बेटा! तू ठीक है?'' लड़के ने कहा, ''तू मुझे पहचानता है मैं कौन हूँ? मैं तेरा लड़का नहीं हूँ। मैं वही सिपाही हूँ जो लड़ाई में जाते समय तुझे दो हजार रुपये देकर गया था। मैं जिस घोड़ी पर बैठकर लड़ाई में गया था वह घोड़ी मुझे दुश्मनों के ठिकाने पर ले गई और दुश्मनों ने मुझे मार डाला। मैं अब तक ब्याज समेत अपने सारे पैसे खर्च करवा चुका हूँ। बस यही अढ़ाई रुपये बचते थे जो खर्च करवाकर जा रहा हूँ। मैं वक्त से पहले मारा गया और मेरे पैसे रखकर तूने मेरे साथ अपना हिसाब बना लिया। जिस वजह से मुझे तेरे घर में जन्म लेना पड़ा। तेरी पुत्रवधु वही घोड़ी है जो मुझे दुश्मनों के ठिकाने पर ले गई और मैं मारा गया, मैं इसे यही सजा देकर जा रहा हूँ कि अब यह सारी जिंदगी रोएगी।'' उस ठेकेदार ने कहा, ''महाराज! अब आप खाना खाएं। मैं फौजी के लिए रोऊं या घोड़ी के लिए रोऊं?''

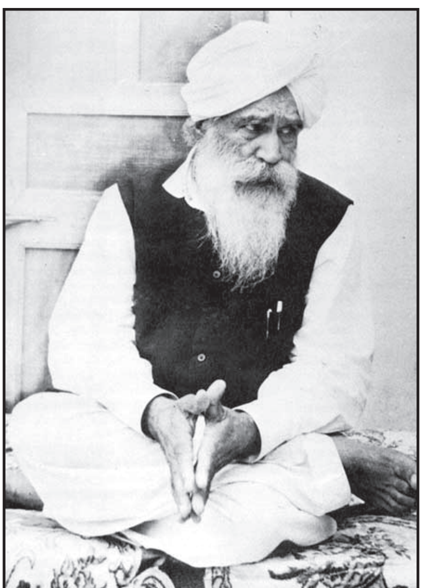

प्यारेयो! यह सब देने-लेने का सिलसिला है। ज्ञान न होने की वजह से हम रोते-बिलखते हैं। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे अगर सतसंगी थोड़ा सा सिमरन करके तीसरे तिल पर एकाग्र हो जाए तो इसे एक जन्म का ही नहीं पिछले कई जन्मों का ज्ञान हो जाता है कि हमने पहले कहाँ जन्म लिया था? सन्त-सतगुरु इस संसार में परमात्मा की मर्जी मानने के लिए आते हैं। वही शिष्य है जो गुरु की मर्जी माने। सन्त-सतगुरु परमात्मा की मर्जी मानकर एक नमूना पेश करते हैं।

महाराज सावन सिंह जी खुद करण-कारण थे। उन्होंने अपने बत्तीस साल के लड़के का अंत समय ब्यास रेलवे स्टेशन पर ही पूरा करवाया। आपने सोचा कि अगर मैं इसे डेरे ले गया तो बीबी रुक्को बाबा जयमल सिंह जी पर जोर डालेगी कि इस लड़के को जिन्दा रखें लेकिन ऐसा करने से सन्तों की गुरुमुखता में फर्क आता है। उस समय आपने अपने दिल को फोलकर देखा जिसमें न खुशी थी, न गम था। यह मेरे गुरु बाबा जयमल सिंह जी की ही ताकत थी। हमें वह ताकत तभी मिलेगी जब हमारा ध्यान गुरु की तरफ होगा अगर उस समय हम रोते-पीटते हैं तो गुरु क्या करेगा?

महाराज कृपाल बताया करते थे कि आपका एक लड़का था। आप जो भी सामान बाजार से लेकर आते वह लड़का सारे सामान पर ही अपना कब्जा कर लेता। आप उससे कहते, ''पहले तू तसल्ली करले, हम बाद में खा लेंगे।''

घरी दो में मेला बिछुरै साधो, देखि तमासा चलना।

महात्मा चरनदास कहते हैं, ''यह दुनिया दो घड़ी का मेला है। आखिर इस मेले ने समाप्त हो जाना है। पता नहीं हमने कब इस मेले में से हाथ झाड़कर चले जाना है?'' गुरु अर्जुनदेव जी मिसाल देते हैं:

बिरखै हेठ सभ जंत इकट्ठे, इक तत्ते इक बोलण मिट्ठे।
अस्त उदोत भया उठ चले, ज्यों ज्यों औध विहाएणीआ॥

जिस तरह शाम के समय रात काटने के लिए बहुत से पक्षी वृक्ष पर आकर बैठ जाते हैं। उनमें से कोई झगड़ता है, कोई प्यार करता है लेकिन सुबह होते ही कोई भी एक-दूसरे को बताकर नहीं जाता। सब अपने-अपने रास्ते पर चल पड़ते हैं।

बेशक हम हुकूमत के मालिक हों! इसी तरह हम भी इस संसार में रात काटने के लिए आए हैं। हम नहीं जानते कि माता कहाँ से आई है? पिता कहाँ से आया है? बहन कहाँ से आई है? भाई कहाँ से आया है? हम सभी मिलकर उस वृक्ष की तरह एक घर में रैन बसेरा करते हैं। कोई इस जिंदगी के वृक्ष के नीचे प्यार से रहते हैं, कोई आपस में लड़ते हैं, कोई भोग-विलास करते हैं।

जैसे जैसे जिसकी उम्र खत्म हो जाती है वह इस संसार से चला जाता है। माँ का समय आ जाता है तो वह चली जाती है, पिता का समय आ जाता है तो पिता चला जाता है, भाई का समय आ जाता है तो भाई चला जाता है, बेटे का समय आ जाता है तो बेटा चला जाता है। कोई किसी को बताकर नहीं जाता कि मैं कहाँ जा रहा हूँ? जैसे वे पक्षी आपस में सलाह करके नहीं जाते उसी तरह हम भी आपस में सलाह करके नहीं जाते। कबीर साहब कहते हैं:

आसी पासी योद्धा खड़े, सभी बजावें गाल।
मन्ज महल्लों ले गया, ऐसा काल कराल॥

काल, पहरदारों के खड़े-खड़े ही उठाकर ले जाता है। मैंने अपनी जिंदगी में राजा पटियाला और राजा कपूरथला की मौत देखी है। जिस समय राजा पटियाला की मौत हुई उस समय मैं आर्मी में सिग्नेलर था, उन महलों में हमारी ड्यूटी थी। किसी को भी पता नहीं लगा कि काल कब उठाकर ले गया। योद्धाओं की बंदूकें तनी हुई ही रह गईं।

जो ह्याँ आकर हुए इकट्ठे, तिन सें बहुरि न मिलना॥

आप कहते हैं, ''जब हमें अपने पिछले रिश्ते-नाते याद नहीं कि हम किस घर में पैदा हुए थे? हमारे कितने बच्चे थे? तो हमें अब वाले रिश्ते-नाते कैसे याद रहेंगे? जो बिछड़ गया उसने फिर नहीं मिलना।''

मैं बताया करता हूँ कि बाबा बिशनदास जी के नज़दीक एक मुसलमान फकीर फत्ती का भी डेरा था। बाबा बिशनदास और फत्ती 'दो-शब्द' का अभ्यास करते थे। जब बाबा बिशनदास ने महाराज सावन के दर्शन किए उस समय फत्ती भी उनके साथ था। फत्ती ने बैठे-बैठे महाराज सावन से कहा, ''आपका एक जन्म राजा फरीदकोट के यहाँ भी हुआ है।'' महाराज जी ने हँसकर कहा, ''क्या अब कोई मुझे उन महलों में घुसने देगा?'' चरनदास जी कहते हैं जिनकी आँखें खुली हैं, वे जानते हैं कि हम कहाँ से बिछुड़े हुए हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

नदियाँ वाये विछुनियाँ, मेला संजोगी राम।

पीछे से एक नदी आती है, आगे चलकर वही अलग-अलग नदियों में बदल जाती हैं। बिछड़कर पानी भी पानी से नहीं मिलता। प्यारेयो! अगर हम किसी योनि में इकट्ठे हो भी जाएं! हमें एक-दूसरे का पता नहीं होता कि यह पहले हमारा बाप था जो आज हमारे घर में कुत्ता बना हुआ है या यह पहले हमारी माता थी जो आज हमारे घर में कट्टी या बच्छी बनी हुई है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जीव ज्यादा दूर जाकर जन्म नहीं लेता।''

जहाँ आसा तहाँ वासा॥

मैं अपने घर की एक मशहूर कहानी सुनाया करता हूँ कि हमारे घर में एक कुत्ता था। बाबा बिशनदास जी ने मेरे पिता जी को बताया, ''लालसिंह! यह पहले तुम्हारा बाप था इस जन्म में कुत्ता बनकर तुम्हारे घर में आया है।'' वह कुत्ता मंगलवार का व्रत रखता था। उसे कौन सा पंडित बताता था कि आज मंगलवार है?

बीज मंत्र सर्वस्व को ज्ञान।

महात्मा चरनदास जी कहते हैं, ''अंदर अपनी योनि का ज्ञान होता है। एक बार बिछुड़ जाने पर फिर जिस योनि में मिलाप होता है हम नहीं जानते कि पिछली योनि में इससे हमारा क्या रिश्ता था?''

जैसे नाव नदी के ऊपर, बाट बटाऊ आवैं।

जिस तरह नाव में मुसाफिर नदी पार करके अपने अपने रास्ते चल पड़ते हैं। कौन किसके साथ सलाह करता है कि मैं कहाँ से आया हूँ; मैंने कहाँ जाना है? मौलाना रूम कहते हैं, ''मैं अनेकों बार इस संसार में घास की तरह पैदा हुआ हूँ। मैं अनेकों बार पेड़ के साथ फल बनकर लगा हूँ, मुझे प्रेमियों ने खाया है।''

गीता में कृष्ण भगवान अर्जुन से कहते हैं, ''अर्जुन! तेरे और मेरे कई जन्म हो चुके हैं। तुझे इस राज़ का पता नहीं लेकिन मुझे ज्ञान है।'' जब बड़े-बड़े अवतार इस **मौत-पैदाइश** के दुःख से नहीं बचे तो जीव किस बाग की मूली हैं? गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

बटाऊ से जो लावे नेह, ताँके हाथ न आवे खेह।

हम सब यहाँ मुसाफिर की तरह बैठे हैं जो अपने-अपने रास्ते चले जाते हैं। जो मुसाफिर से प्यार करेगा उसके हाथ क्या आएगा? क्योंकि मुसाफिर ने तो सुबह उठकर चले जाना है।

मिल मिल जुदे होयँ पल माहीं, आप आप को जावैं॥
या बारी बिच फूल घनेरे, रंग सुगन्ध सुहावैं।

अब महात्मा चरनदास जी बाड़ी की मिसाल देते हैं जैसे बाड़ी में कई तरह के फूल उगाए जाते हैं, ये फूल देखने में सुंदर लगते हैं और सुगन्ध फैलाते हैं। इसी तरह हमारा गृहस्थ जीवन भी एक बाड़ी* की तरह है, इसमें कोई बेटा, कोई बेटी, कोई पति और कोई पत्नी है। इसमें हम अपने-अपने गुल खिलाते हैं।

लागैं खिलैं फेरि कुम्हिलावैं, झरैं टूटि बिनसावैं॥

*बाड़ी - बगीचा

फूल लगते हैं, सुगंध फैलाते हैं कुछ दिन रंग फैलाकर फिर झड़ जाते हैं। इसी तरह पैदा होते हैं, जवान होते हैं फिर मौत आ जाती है।

दारा सुत सम्पति को सुख, ज्यों मोती ओस बिलावै।

अब महात्मा चरनदास जी कहते हैं, ''हम बेटा, बेटी, धन, दौलत और जिन पदार्थों में सुख समझे बैठे हैं ये हमारा साथ नहीं देते। जिस तरह ओस के मोतियों को झड़ते हुए समय नहीं लगता इसी तरह इनके बिछड़ते हुए भी समय नहीं लगता।''

ह्याँई मिलैं और ह्याँ नासैं, ताको क्यों पछितावैं॥

यहाँ हर एक का जीवन थोड़ा सा है। फरीद साहब कहते हैं:

कित्थे तेरे माँ - प्यो, जिन्नी तू जणयां ओए।
तें पासो ओह लद्द गए, तू अजे न पतीनिया ओए॥

तेरे बड़े-बुजुर्ग कहाँ हैं? आप सोचकर देखें! हमारे माता-पिता जायदाद, धन-दौलत और हाट-हवेली से प्यार करते थे। उन्होंने ये हाट-हवेलियाँ अपने रहने के लिए बनवाई थी। वे इन सब चीज़ों को अपने साथ लेकर नहीं गए। क्या हम हाट-हवेली और कारें अपने साथ लेकर जाएंगे? कबीर साहब कहते हैं, ''इंसान मुट्ठी बंद करके जन्म लेता है और हाथ पसारकर चला जाता है।''

दै कुछ लै कुछ करि ले करनी, रहनी गहनी भारी।

महात्मा चरनदास बहुत गहरी बात समझाते हुए कहते हैं,''ऐसा नहीं कि आप इस संसार को छोड़कर जंगलों में जाकर साधु बन जाएं। इस देह में बैठकर लेन-देन भी पूरा करना है। जिससे जो लेना है वह लें और जिसे जो देना है वह दें। क्या बाप-बेटे या माँ-बेटे का झगड़ने के लिए दिल करता है? हम जो एक-दूसरे से प्यार करते हैं या झगड़ा करते हैं; यह हमारे पिछले कर्मों का लेन-देन बिगड़ा हुआ है इसलिए हम एक-दूसरे से झगड़ते हैं अगर हमारा पिछले कर्मों का बना हुआ हो तो हम आपस में क्यों झगड़ें?

जंगलों-पहाड़ों में जाने की बात न सोचें। इस देह में बैठकर लेन-देन करें। 'शब्द-नाम' की कमाई करके अपने घर का भी कुछ बना लें।

हरि सूँ नेह लगाव आपनो, सो तेरो हितकारी॥

परमात्मा हमारा हितकारी है या सतगुरु हमारे हितकारी हैं जो हमें परमात्मा से मिलवाने के लिए आते हैं। सतगुरु बिना किसी मुआवजे के हमें परमात्मा के साथ जोड़ते हैं, वे सिर्फ जोड़ते ही नहीं साथ चलने के लिए भी तैयार होते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सज्जन सेही आखिए, जो चलदयां नाल चलन।
जित्थे लेखा मंगिए, तित्थे खड़े दसन॥

प्यारेयो! मैं बताया करता हूँ कि सन्तमत परियों की कहानी नहीं। सन्तमत सच्चाई पर खड़ी है अगर शिष्य 'नाम' की कमाई करता है तो वह बताकर जाएगा अगर शिष्य 'नाम' की कमाई नहीं करता शराब, कबाब और ऐब नहीं छोड़ता! तो गुरु क्या करेगा?

महाराज सावन सिंह जी का एक नामलेवा लाभ सिंह था। उसके भाई बहादुर सिंह ने मुझे बताया कि 'नाम' लेने के बाद भी वह नशा करता रहा। आखिरी समय में उसके पेट में रसौली हुई। अन्त समय में महाराज सावन सिंह जी आए। उसने अपने भाई बहादुर सिंह से कहा, ''महाराज जी तो आ गए हैं लेकिन मुझे शर्म महसूस हो रही है कि मैं उनका सामना कैसे करूं?''

सन्त गरीब नवाज़ होते हैं अगर हम 'नाम' लेकर थोड़ी बहुत कमाई करते हैं तो गुरु देख लेता है कि यह मेरे लिए क्या करता है। गुरु को अपने 'नाम' की लाज होती है अगर गुरु बाहर मौज नहीं बरताता तो अंदर जरूर संभाल करता है। दुनिया पलट जाए लेकिन गुरु अपने शिष्य को काल के हवाले नहीं होने देता।

प्यारेयो! आपको बताया जाता है कि यह जीवन क्षण भंगुर है। नशे इंसान को खोखला कर देते हैं। सोचने की शक्ति कायम नहीं रहती।

पंजे ऐब भोगेन्दया, उम्र गँवाई यार।
ऐह मन न रजया, हुण कद रजसी यार॥

ऋषियों-मुनियों ने इस दुःख से डरते हुए ही भजन-अभ्यास किया। कबीर साहब कहते हैं :

यम का ठेंगा बुरा है, ओह नहीं सहा जाए।
एक जो साधु मोहे मिलया, तिन्हों लिया बचाए॥
कबीर घांणी पीड़दे सतगुरु लए छुड़ाए।
परा पूर्वली भावनी ते प्रकट होई आए।

हमारा कोई पूर्वला कर्म था जो ऐसे साधु से मिलाप हुआ। उसने घर-बार, बाल-बच्चे नहीं छुड़वाए और कहा कि अपनी जिम्मेवारियों को पूरा करते हुए भजन-सिमरन करें। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''पहले जो ऐब कर लिए सो कर लिए; अब वहीं रुक जाएं।''

सत संगति को लाभ बड़ो है, साध भक्त समझावैं।

कोई वेद-ग्रन्थ यह नहीं कहता कि आप साधु की संगत में न जाएं। सभी महात्मा संगत पर जोर देते हैं क्योंकि हमें संगत में ही अपनी गलतियों का पता लगता है कि हमारा रास्ता कहाँ है और हम कहाँ जा रहे हैं? तुलसी साहब कहते हैं:

तुलसी पिछले पाप से, हरि कथा न सहाए।
चाहे सोवे चाहे चले, चाहे दिए बात चलाए॥

पिछले पापों की जहर की वजह से हमें परमात्मा की कथा अच्छी नहीं लगती। हम सतसंग में जाकर सो जाएंगे, बातें करेंगे या ऐसे ही उठकर चले आएंगे। कबीर साहब कहते हैं:

पापी भक्त न भावी, हरि पूजा न सहाए।
मक्खी चंदन पर हरे, जे दुर्गन्ध ते जाए॥

पापी आत्मा ने खुद तो भक्ति क्या करनी है उसे भक्ति करने वाले भी अच्छे नहीं लगते। ऐसी आत्माएं वहाँ सारा दिन मस्त रहती हैं जहाँ

निन्दा, चुगली और शराबों के दौर चलते हैं। मक्खी सारा दिन गंदगी पर ही भिन-भिनाती रहती है।

चरनदास ही राम सुमिर ले, गुरु सुकदेव बतावैं॥

चरनदास जी के गुरु सुकदेव मुनि थे। चरनदास जी को सुकदेव मुनि से 'नाम' मिला था। हर सन्त-महात्मा अपने गुरु के गुण गाता है।

बलिहारी गुरु आपणें, देयोहाणी सदवार।
जिन मानस ते देवते किए, करत न लागी वार॥

मेरे गुरु सुकदेव मुनि ने मुझसे कहा, ''प्यारे चरनदास! यह जीवन क्षण भंगुर है। जिंदगी सिमरन में ही है। चलते, फिरते, उठते, बैठते सिमरन करें। सिमरन में लगाए गए श्वास ही लेखे में हैं। जब हर पाप लेखे में है तो सिमरन भी लेखे में है। धर्मराज हमारे पापों का चिट्ठा बनाकर रखता है। सन्त हमें शब्द-रूप गुरु के साथ जोड़ते हैं वह हमारे सिमरन का चिट्ठा बनाकर रखते हैं।''

महाराज जी कहा करते थे, ''अगर सन्त हमारा पर्दा खोल दें! हम थोड़े से दुःख के समय में उस कमाई को इस्तेमाल कर लेंगे। एक समझदार पिता अपने बेटे के आगे दुनियावी माया नहीं रखता कि यह अभी अनजान है, इस माया को जुए इत्यादि में नष्ट कर देगा। पिता उस माया को बेटे के लिए ही संभालकर रखता है लेकिन जब वह बेटा समझदार हो जाता है तो पिता उसके हक के साथ अपना हक भी उसे दे जाता है। इसी तरह हमारा सतगुरु हमारे भजन को संभालकर रखता है। हम जानते हैं कि शेरनी का दूध रखने के लिए सोने के बर्तन की जरूरत पड़ती है।''

प्यारेयो! वह हृदय भी कुछ होना चाहिए जहाँ 'नाम' ने प्रकट होना है, गुरु ने बैठना है। जो शिष्य अपना हृदय बना लेता है गुरु अपनी बरकतें लेकर शिष्य के अंदर बैठ जाता है। महात्मा चरनदास ने हमें दुनिया की असलियत बताकर सतसंग में जाने का होका दिया है। ब्रह्मानंद जी कहते हैं:

सतसंगत जग सार साधो, सतसंगत जग सार रे।

जीवन की सच्चाई सत-संगत है। हम सतगुरु का सतसंग सुनते हैं। हमारे सतगुरु हमें हिदायत करते हैं कि आपको ग्रुप लीडर जब गुरु के वचन सुनाने के लिए समय दे तो आप उससे भी लाभ उठाए। सतगुरु ग्रुप लीडर या प्रतिनिधि के जरिए भी अपनी दया देता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर कोई आपसे बीस रुपये लेकर (उस समय करन्सी की बहुत कीमत थी।) भी गुरु के वचन सुना दे तो भी बहुत फायदेमंद सौदा है।'' सन्त जिसे ग्रुप लीडर बनाते हैं वह प्रतिनिधि आपसे कोई तनख्वाह भी नहीं लेता, आपकी मुफ्त में सेवा करता है। हमें ऐसे प्रेमियों से सतसंग सुनकर फायदा उठाना चाहिए।

परमात्मा सच है। आत्मा, परमात्मा की अंश है। जब आत्मा नौ द्वारों में से निकलकर स्थूल, सूक्ष्म और कारण के पर्दे उतारकर 'शब्द' के साथ जुड़ जाती है तब यह सच की संगी बन जाती है।

महात्मा चरनदास ने हमें दुनिया के रिश्तों की क्रिया बता दी कि जब आत्मा शरीर में से निकल जाती है तो सगे संबन्धी उसे आग के सुपुर्द कर देते हैं और सब यही कहते हैं, ''अब इस मिट्टी के साथ क्या प्यार करें?'' गुरु तेगबहादुर जी कहते हैं:

जगत में झूठी देखी प्रीत, जगत में झूठी देखी प्रीत।
अपने हित स्यों सब लागे क्या दारा क्या मीत॥
मेरो मेरो सबहो कहत है, हित स्यों बाँधयो चीत।
अंत काल संगी ना कोऊ, यह अचरज है रीत।
नानक भौजल पार परो, जो गाए प्रभु के गीत॥

मैं बताया करता हूँ कि हम सतसंगी लोग घर में मौत होने पर या शादी के समय गुरुमत से थिरकते हैं। मैं देखा करता हूँ कि शादी की थोड़ी सी खुशी के समय अपने आपको बहुत अच्छा सतसंगी कहलवाने वालों से काल क्या करवाता है? उन्हें सब कुछ भुलाकर नचवाता है।

महाराज सावन सिंह जी का नामलेवा, गंगानगर का एक परिवार मेरे बहुत नज़दीक था। उन्होंने कहा कि हमारे घर में शादी है जिसमें आपका आना बहुत जरूरी है। उन दिनों मेरी आयु कम थी और मैं बहुत मजबूत था। मैंने उनसे कहा, ''मैं कभी किसी शादी वगैरह में नहीं गया; आप लोग शादी में नाचते हैं मुझे यह सब अच्छा नहीं लगता।'' उन्होंने कहा, ''हम महाराज सावन सिंह जी के नामलेवा हैं, हमने तो नाम जपना है।'' मेरा महाराज सावन सिंह जी के नामलेवा प्रेमियों के साथ अच्छा लगाव था, मैं उनके घर चला गया।

शाम के समय मैंने उनसे कहा कि चलो अभ्यास करें। उन्होंने कहा, ''अब कोई अभ्यास का समय है?'' मेरे साथ चार-पाँच प्रेमी और थे। हम उनका घर छोड़कर किसी और के घर में जाकर अभ्यास करने लगे। हमारा भजन में अच्छा मन लगा हुआ था। थोड़े समय बाद जागो के गीत गाते हुए कुछ औरतें सिर पर मटके रखकर वहाँ आ गई। उन्होंने खुद तो भजन क्या करना था हमें भी अभ्यास से उठा दिया।

हम महाराज सावन सिंह जी के समय पर देखते रहे हैं कि शादी के समय में प्रेमी लोग भजन बोलते थे। यह काल हमसे डंडे के जोर पर ही हमें रुला देता है और डंडे के जोर से ही हमें नचा देता है। ऐसे समय में भी हमें अपने गुरु को हाजिर-नाजिर याद रखना चाहिए।

महात्मा चरनदास ने हमें प्यार से समझाया कि 'शब्द-नाम' की कमाई करें। सतसंग में जाएं। आपको जिस गुरु ने 'नाम' दिया है वही आपका हितकारी है, उसका 'नाम' ही आपके साथ जाएगा। जिस चीज़ ने आपके साथ जाना है उसके साथ प्यार करना चाहिए। जिस चीज़ ने आपसे बिछड़ जाना है उसके साथ वैसा ही आरजी प्यार करना चाहिए। न आए की खुशी न गए का गम।

बिन नामे को संग न साथी, मुक्ते नाम ध्यावंणया।

U U U

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

ख्वाहिशें

16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

एक प्रेमी :- अगर हम ऐसी टेबल पर बैठकर खाना खाएं जहाँ पहले से कोई व्यक्ति मीट खा रहा हो तो क्या हम उसके कर्म अपने ऊपर लेते हैं?

बाबा जी :- सन्तबानी मासिक पत्रिका को छपते हुए काफी साल हो गए हैं, ऐसे सवालों के जवाब सन्तबानी मासिक पत्रिका में छप चुके हैं। हर प्रेमी को पत्रिका पढ़ने की कोशिश करनी चाहिए। सतसंगियों को अपने खाने की तरफ खास तवज्जो रखनी चाहिए। जितना हमारा अन्न पवित्र होगा उतने ही हमारे ख्याल पवित्र होंगे, उतना ही मन पवित्र होगा। मन पवित्र होगा तो हमारी आत्मा पर अच्छा असर पड़ेगा।

एक प्रेमी :- मैं इस साल और पिछले साल जितना ज्यादा आपके नज़दीक आई हूँ मेरे अंदर उतनी ही **ख्वाहिशें** पैदा हुई हैं; जिसके लिए मैं क्षमा चाहती हूँ। मैं जितना ज्यादा सिमरन करने की कोशिश करती हूँ उतनी ही ज्यादा **ख्वाहिशें** उठती हैं, इन्हें रोकने के लिए क्या करूं?

बाबा जी :- इस बारे में मैंने कल वाले सतसंग में बताया था अगर आप थोड़ा सा भी सोचती तो आपके सवाल का जवाब मिल गया होता। जब हम भजन-अभ्यास नहीं करते तो यह मन हमें गुमराह करता है भ्रम में डालकर हमारे अंदर दुनिया की **ख्वाहिशें** पैदा करता है। मन को अभ्यास में कैद होना पड़ता है, यह कैद से डरता हुआ हमेशा ही हमारी आत्मा को गुमराह करता है। जब यह मन अपने मालिक का काम बखूबी करता है तो क्यों न हम अपने मालिक का काम करें?

जिस परमात्मा ने हमें इस संसार में भेजा है क्या उसे हमारा फिक्र नहीं? मैं बताया करता हूँ कि परमात्मा को हमारा फिक्र हमसे

ज्यादा है अगर हम यह कहें कि हम अपनी परवरिश ख़ुद करते हैं तो यह अज्ञानता है। ऐसा हम तब तक ही कहते हैं जब तक हमारी आँखें बंद हैं, हमारी ऊपर चढ़ाई नहीं। सन्त कहते हैं कि हमारी परवरिश और फिक्र करने वाली कोई और ताकत है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सुख-दुःख, अमीरी-गरीबी, तंदरुस्ती-बीमारी ये सब हमें हमारे कर्मों के मुताबिक ही मिलते हैं। हम ये सब लिखवाकर लाए हैं। प्रालब्ध शरीर की रचना रचने से पहले से ही बनी हुई हैं।'' तुलसी साहब कहते हैं:

पहले बनी प्रालब्ध पाछे बना शरीर।
तुलसी दासा खेल अचरच है पर मन नहीं बंधदा धीर॥

यही अच्छा तरीका है कि हम इन ख्वाहिशों को 'नाम' की तरफ, गुरु की तरफ लगाएं अगर मन **ख्वाहिशें** पैदा करे तो हम उन ख्वाहिशों को गुरु के अपर्ण कर दें। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जिस आदमी के अंदर जितनी ज्यादा **ख्वाहिशें** उठती हैं वह उतना ज्यादा कंगाल होता है। इंसान की ख्वाहिशें कभी पूरी नहीं होती अगर परमात्मा एक लाख दे दे तो हमारे अंदर दो लाख की ख्वाहिश पैदा हो जाती है। एक करोड़ दे दे तो दो करोड़ की ख्वाहिश पैदा हो जाती है। ख्वाहिशें बढ़ती ही चली जाती हैं। **ख्वाहिशें** पैदा करके मन को आसान तरीका मिल जाता है जिससे न कुछ लेना है न कुछ देना है।''

एक बार मोहम्मद साहब अपने सेवकों को सतसंग देते हुए कह रहे थे, ''सब कुछ अल्लाह ताला ख़ुदा के हाथ में है वह जो चाहे सो करे।'' उनका एक आलसी सेवक ऊँटों की सेवा किया करता था। उसके दिल में ख्याल आया कि जब सब कुछ अल्लाह ही करता है तो मैं ऊँटों की सेवा क्यों करूं? मैं ऊँटों की मालिश करता हूँ जिसमें काफी मेहनत करनी पड़ती है। जब अल्लाह ताला ही सब कुछ करता है तो मुझे ऊँटों की मालिश करने की क्या जरूरत है? उसने मोहम्मद साहब से सवाल किया, ''महाराज जी! जब अल्लाह ताला ही सब कुछ करता है तो मैं ऊँटों की मालिश क्यों करूं?'' मोहम्मद साहब ने कहा, ''ऊँटों की सेवा

करना और रखवाली करना तेरा फर्ज है अगर फिर भी कोई उन्हें ले जाता है तो तू नाराज न हो खुश रहकर परमात्मा की भक्ति कर।''

उद्यम करेंदया आवे हार ते जांणिए भाणा करतार।

बाबा बिशनदास जी के पास उनके गांव का एक आदमी आया। उस समय मैं भी वहाँ बैठा था। उसने बाबा बिशनदास जी से कहा, ''अंदर बहुत ख्वाहिशें उठती हैं; एक ख्वाहिश पूरी नहीं होती कि मन दूसरी ख्वाहिश पैदा कर देता है।'' बाबा बिशनदास ने कहा, ''**ख्वाहिशें** उठाने वाला मन लपोटशंख की तरह होता है।'' मैंने अपनी जिंदगी में लपोटशंख के बारे में बहुत कहानियाँ सुनी हैं लेकिन मैं नहीं जानता था कि लपोटशंख क्या होता है? मैंने बाबा बिशनदास जी से प्रार्थना की कि आज आप इस बारे में हमें कुछ बताएं।

बाबा बिशनदास जी ने बताया एक प्रेमी ने भगवान की भक्ति की, भगवान ने खुश होकर उसे एक शंख देकर कहा कि तुझे जब भी अन्न-पानी, पैसे-टके की जरूरत हो इसे बजा लेना तुझे सब कुछ ही मिल जाएगा। वह प्रेमी भगवान से शंख लेकर किसी गांव में चला गया; उसने किसी घर में जाकर कहा कि मुझे रात काटनी है। घर के लोगों ने कहा, ''महात्मा जी! आपका स्वागत है। आप यहाँ रहें, हम आपके लिए खाना इत्यादि तैयार करते हैं।'' उस प्रेमी ने कहा, ''मेरे पास ऐसा साधन है जिससे भगवान मुझे बना-बनाया खाना दे देता है।''

घर के लोगों ने सोचा कि ऐसी कौन सी चीज़ है जिससे बना-बनाया खाना मिल जाता है? प्रेमी ने स्नान करके भजन-पाठ करके शंख बजाया तो बना-बनाया खाना आ गया और उसने जो चीज़ मांगी वह आ गई। रात को घर के लोगों ने प्रेमी का शंख चुरा लिया। सुबह उठकर प्रेमी ने पूछा कि सेवकों यहां मेरा शंख रखा था। घर के लोगों ने कहा, ''महात्मा जी ! आप चाहे किसी की भी कसम ले लें, हमने आपका शंख नहीं चुराया।'' प्रेमी जानता था कि शंख इन्होंने ही चुराया है। वह उदास होकर उनके घर से चला गया।

प्रेमी ने फिर से भगवान की भक्ति की। भगवान ने कहा, ''मैंने पहले भी तुझे बहुत कुछ दिया है; तेरा शंख कहां है?'' प्रेमी ने कहा कि मैं किसी के घर गया था, उस घर के लोगों ने मेरा शंख चुरा लिया। अब भगवान ने कहा, ''मैं तुझे एक और शंख देता हूँ लेकिन यह शंख न कुछ लेता है न कुछ देता है। तू यह शंख लेकर उसी घर में चला जा। वे लोग यह शंख उठा लेंगे और पहले वाला शंख रख देंगे।''

प्रेमी फिर उसी घर में गया। घर के लोगों ने सोचा कि वही महात्मा फिर आ गया है, अब जरूर इसके पास कुछ अच्छी चीज़ होगी ! घर के लोगों ने प्रेमी की बहुत सेवा की और कहा कि आपको जो चीज़ चाहिए हमें बताएं? प्रेमी ने कहा, ''मेरे पास शंख है यह सब चीज़ें दे देता है।'' प्रेमी ने शंख बजाकर कहा, ''सौ रुपये की जरूरत है।'' शंख ने कहा, ''उठा दो सौ रुपये।'' प्रेमी ने फिर कहा, ''दो सौ रुपये की जरूरत है।'' शंख ने कहा, ''उठा चार सौ रुपये।'' घर के लोगों ने सोचा कि यह शंख ठीक है, पहले वाला शंख तो सिर्फ रोटियां ही देता था। घर के लोगों ने प्रेमी को बातों में लगाकर पहले वाला शंख रख दिया, दूसरा शंख उठा लिया। प्रेमी अपना शंख लेकर उनके घर से चला गया।

घर के लोगों ने सोचा कि जल्दी से माया बनाई जाए। इस शंख से जो मांगे यह दोगुना देता है। उन्होंने शंख से कहा, ''एक हजार रुपये दो।'' शंख ने कहा, ''उठाओ दो हजार रुपये।'' उन्होंने कहा, ''दो हजार रुपये दो।'' शंख ने कहा, ''उठाओ चार हजार रुपये।'' इस तरह बहुत समय तक उनकी बातचीत चलती रही। आखिर घर के लोगों ने शंख से कहा कि तू देता तो कुछ नहीं सिर्फ बोलता ही है। शंख ने कहा, ''मैं लपोटशंख हूँ। मैं लेता-देता कुछ नहीं सिर्फ बोलता ही हूँ।''

हमारी ख्वाहिशों की भी यही हालत है, ये पूरी नहीं होती। यही अच्छा है कि हम मेहनत करें, गुरु से प्यार करें; गुरु पर भरोसा रखें। क्या हमारे गुरु को हमारी जरूरतों का ज्ञान नहीं? वह हमारे अंदर बैठा है हमारी हर जरूरत पूरी करेगा, वह बेइंसाफ नहीं।

जब मेरा मिलाप परमपिता कृपाल से हुआ तब मैंने आपसे यही विनती की कि मेरा दिल दिमाग खाली है। मैं नहीं जानता कि मैं आपसे क्या कहूँ, क्या माँगूं? महाराज कृपाल ने कहा, ''मैं खाली दिल दिमाग देखकर ही पाँच सौ किलोमीटर चलकर आया हूँ। दिमाग वाले मेरे पास बहुत हैं।'' ऐसा नहीं कि दिल-दिमाग खाली होने के कारण मैंने कुछ किया नहीं। मेरे गुरु ने मुझसे जो कहा मैंने उनके हुक्म को मानना ही जिंदगी का अंग समझा। हर सतसंगी को इस बात से शिक्षा लेनी चाहिए और इसे अपने अंदर धारण करना चाहिए।

हम जिसकी याद में बैठे हैं, जिसकी भक्ति कर रहे हैं वह हमें हाथ पर हाथ रखकर बैठने के लिए नहीं कहता। पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है और हमारा ज्यादा से ज्यादा फिक्र रखता है। सूफी सन्त बुल्लेशाह कहते हैं:

वेड़े सज्जण दे जाएके, सानूं कीता सहूल।
ओह प्रभु साड्डा सखी है, असी सेवा कनियों सूम॥

सूम* उसे कहते हैं जो न खुद खाए और न किसी को खिलाए। न दान करे और न ही किसी को दान करने की सलाह दे। सूम अपना कमाया हुआ धन बैंकों में ही छोड़कर सांसारिक यात्रा पूरी करके चला जाता है। चाहे चमड़ी चली जाए लेकिन किसी को भी दमड़ी देने के लिए तैयार नहीं होता। इसी तरह हमारी भी यही हालत है कि हम दुनियावी ख्वाहिशें पूरी करने के लिए दिन-रात काम करते हैं लेकिन भजन के सूम हैं। सोचते हैं! अगर ज्यादा सिमरन कर लिया तो कहीं हमारे ऊपर वजन न आ जाए? गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

हर धन के भर लेहो भंडार, नानक गुरु पूरे नमस्कार।

हम जो रोज-रोज भजन करते हैं यह हम एक किस्म का भंडार इकट्ठा कर रहे होते हैं, जिसे हमारा गुरुदेव हमारे लिए संभालकर रखता है। वह हमारा संभाला हुआ धन और अपना कमाया हुआ धन भी हमें दे जाता है।

*सूम - कंजूस

कबीर साहब एक गरीब घर में पैदा हुए थे। आप ताना बुनकर अपना गुजारा करते थे। उस समय ताना बुनने की कोई खास मजदूरी नहीं मिलती थी। आपने विश्वास रखकर भक्ति की और मेहनत की सच्ची कमाई से अपनी रोजी-रोटी चलाई। दुनियादार हमेशा ही सच्चाई की विरोधता करते हैं। काशी (वाराणसी) के पंडितों ने जगह-जगह संदेश भेज दिया कि कबीर साहब के घर यज्ञ है।

दूर-दूर से लोग कबीर साहब के घर खाना खाने के लिए आ गए लेकिन आपके घर में अन्न-पानी का इंतजाम नहीं था। लोई आपकी सेवा और कामकाज में हाथ बँटवाती थी, वह घबराई तो कबीर साहब ने कहा, ''लोई! क्यों घबराती है यह संगत और हम उसी परमात्मा सतनाम के हैं।'' कबीर साहब अंदर जाकर अभ्यास में बैठ गए और आपने बड़े भरोसे से परमात्मा से कहा, ''हे परमात्मा ! अगर रहती है तो तेरी है जाती है तो तेरी है। मेरा इसमें क्या है?''

इतिहास में आता है कि बहुत से लोग शाम तक खाना खाते रहे लेकिन खाना खत्म नहीं हुआ। संगत धन कबीर ! धन कबीर ! कहने लगी। विरोधी भी आश्चर्यचकित होकर कानों को हाथ लगाने लगे कि कबीर साहब की महिमा तो पहले से भी ज्यादा हो गई लेकिन कबीर साहब अहंकार में नहीं आए; आपने कहाः

न हम किया न करेंगे न कर सके शरीर।
क्या जाणा कुछ हर किया भये कबीर कबीर॥

अगर हमें भरोसा है तो सतगुरु जरूर हमारी मदद करता है। मैं बताया करता हूँ, ''सतनाम कहने पर कबीर की लाज रखी। सतकरतार कहने पर नानक की लाज रखी। आज भी धन कृपाल कहने से अजायब की लाज रख रहा है।''

एक प्रेमी :- अगर सतसंगी को दूसरा जन्म लेना पड़े! क्या वह दूसरे जन्म में अपने गुरु को याद रखेगा?

बाबा जी :- सतगुरु की यही कोशिश होती है कि सतसंगी को दूसरा जन्म न दिया जाए। उसको अंदर के मंडलों से ही साफ किया जाए अगर कोई ऐसा कारण बनता भी है तो उसका इस जन्म से अच्छा जन्म होगा, अच्छे ख्याल होंगे और गुरु जरूर मिलेगा। उसके अंदर पिछले जन्म से भी ज्यादा तड़प होगी लेकिन हमें भूलकर भी मन के अंदर दूसरे जन्म की कमजोरी नहीं रखनी चाहिए। हर सतसंगी के अंदर अटूट विश्वास और पूरा भरोसा होना चाहिए कि मैं इस जलती सड़ती दुनिया में फिर न आऊं; गुरु इसी जन्म में मेरा बेड़ा पार करे।

सुंदरदास महाराज सावन सिंह जी का बहुत अच्छा सेवक था। वह बहुत साल मेरे पास रहा, वह बहुत अच्छा अभ्यासी था। वक्त आने पर आपको उसकी बहुत सी कहानियाँ महाराज कृपाल के साथ मिलेंगी। वह एक मेहनती आदमी था। आमतौर पर वह महाराज सावन के दर्शनों के लिए सवा सौ मील पैदल चलकर जाया करता था। उसने कभी बस या गाड़ी से सफर नहीं किया था।

एक आदमी ने उसे सलाह दी कि सुंदरदास तू साईकिल चलाना सीख ले। उसने कहा, ''भगवान ने टाँगें पैदल चलने के लिए दी हैं साईकिल चलाने के लिए नहीं।'' उसी आदमी ने सुंदरदास से कहा कि तू धर्मराज को क्या कहेगा? सुंदरदास ने कहा, ''मेरा धर्मराज के पास क्या काम? मेरा गुरु सावन सिंह पूर्ण है, वह मुझे लेने के लिए आएगा।''

जब सुंदरदास ने चोला छोड़ा उस समय सैकड़ों ही आदमी मेरे पास बैठे थे। उसने चोला छोड़ने के बारे में छह महीने पहले ही बता दिया था। जब उसका अंत समय आया उसने तीन घंटे पहले ही बता दिया, ''अब तैयारी है प्रशाद करो।'' हमने प्रशाद किया और उसने चोला छोड़ दिया।

हमें भी सुंदरदास की तरह अटूट विश्वास रखना चाहिए कि हमारा धर्मराज और दूसरे जन्म से क्या वास्ता?

U U U

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा गुफा दर्शनों के समय महत्त्वपूर्ण सन्देश

पवित्र जीवन

16 पी. एस. आश्रम राजस्थान

परमात्मा सावन-कृपाल ने दया करके हमें दस दिन अपनी याद में बैठने का मौका दिया। मैंने इन दस दिनों में आपको यही समझाया है कि हमारे रूहानी जीवन में पवित्रता कितनी जरूरी है। दुनियावी जीवन में भी पवित्रता की बहुत महानता है।

जो विषय-विकारों का जीवन नहीं जीते उनका मन शान्त रहता है। दुनिया में ख्याल फैलाने से मन अशान्त हो जाता है; फिर हम शब्द से, गुरु के प्यार से दूर हो जाते हैं।

प्यारेयो ! हमें वह घटना याद रखनी चाहिए जिस तरह मेरे गुरुदेव कृपाल ने कई प्रेमियों के सामने मेरे मुत्तलिक यह कहा था, ''इसमें से महक आएगी, यह चन्दन की तरह महकेगा और वह महक समुद्र पार कर जाएगी।'' मैं यही कहा करता हूँ कि सतसंगी में से महक आनी चाहिए। दूसरा आदमी तभी सतसंगी पर मस्त हो सकता है और उससे फायदा उठा सकता है कि इसमें 'नाम' की खशबू है, मैं भी इस खशबू को प्राप्त करूँ ! यह **पवित्र जीवन** बिता रहा है मैं भी **पवित्र जीवन** बिताऊँ।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''गुरु का नाम शिष्य ही रोशन करते हैं। सन्तों की इज्ज़त उनके सेवकों के हाथ में होती है।''

भैड़ा कुत्ता खसमें गाली

अगर कुत्ता अच्छा है तो लोग उसके मालिक की तारीफ करते हैं। इसी तरह अगर सन्तों के सेवक अच्छे, शान्त और प्यारे होंगे उतनी ही सन्तों की इस संसार मंडल पर ज्यादा महिमा होगी। वे हमें उतनी ही ज्यादा खुशी दे सकेंगे और 'नाम' की बख्शीश कर सकेंगे।

सबसे पहले सतसंगी को यह आदत होनी चाहिए कि वह चलते-फिरते, बातचीत करते हुए अपने ख्याल को *तीसरे तिल* पर टिकाकर रखे। जब हमारी आत्मा को *तीसरे तिल* पर टिकने की आदत बन जाती है तब इसे नीचे खींचने वाली जंजीरें एक-एक करके टूटनी शुरू हो जाती हैं, फिर हम सूक्ष्म मंडल में पहुँच जाते हैं; वहाँ का कर्ता-धर्ता जोत निरंजन है।

कारण मंडल से 'शब्द' आ रहा होता है आत्मा उस 'शब्द' को आसानी से पकड़कर कारण मंडल में पहुँच जाती है। हमारा मन जितना स्थूल देश में तंग करता है, धोखा देता है उतना सूक्ष्म देश में तंग नहीं करता। जितना सूक्ष्म देश में हावी होता है उतना कारण मंडल में हावी नहीं होता। कारण मंडल के शिखर पर पहुँचकर मन की चालें खत्म हो जाती हैं और हमारी आत्मा मन के पंजे से आजाद हो जाती है।

जैसे समुद्र की लहर दूसरी लहर का इंतजार नहीं करती उसी तरह मौत भी किसी का इंतजार नहीं करती। हम सतसंगियों को इंसानी जामें में बहुत सुनहरी मौका मिला है कि हमें हमारी रहनुमाई करने वाला गुरु मिला है, 'शब्द' मिला है। हमारा फर्ज बनता है कि गुरु ने सिमरन की जो अंगुली हमारे हाथ में दी है हम उसे पकड़े रखें।

ऐसा न सोचें ! हमें बुराई करते हुए कोई देख नहीं रहा। प्यारेयो! गुरु स्वरूप आपके अंदर है, आप जो कुछ कर रहे हैं वह देख रहा है लेकिन वह पर्दे के पीछे खामोश है। काल मौका हाथ से नहीं जाने देता।

जब सतसंगी कोई गलत काम करता है तो काल अंदर ही गुरु से कहता है, ''इसकी करतूत देख ! तूने इसे 'नाम' दिया है।'' सतगुरु दया का पुंज और भरोसे वाला होता है। सतगुरु काल से कहता है, ''मैं इसे सुधारूँगा, इसे मौका दे।'' प्यारेयो! हम अंदर गुरु के लिए परेशनियाँ पैदा करते हैं। हमें सदा ही **पवित्र जीवन** जीने की आदत डालनी चाहिए।

अगर खेत में पाँच साल का बच्चा भी बैठा हो तो हममें यह हिम्मत नहीं होती कि हम वहाँ से कोई चीज़ तोड़ लें। परमात्मा रूप गुरु के अंदर होते हुए हम क्या-क्या खोटे कर्म करते हैं। क्या हम परमात्मा का डर पाँच साल के बच्चे जितना भी नहीं रखते?

सन्त-महात्मा हमें बुजदिल बनाने के लिए और समाज परिवार से तोड़ने के लिए नहीं आते। सन्त कहते हैं, ''आप अच्छे इंसान बनें, अपने कुल के प्रति वफादार बनें। हमें समाज के प्रति भी मजबूत होना चाहिए ताकि लोग कहें कि इनके समाज में अच्छे सन्त पैदा हुए हैं। हमें देश के प्रति भी कोई बुरा कर्म नहीं करना चाहिए।'' सन्त-महात्मा हमें दुनिया के प्रति फर्ज और दुनिया में जीने का तरीका भी बताते हैं कि किस तरह हमने दुनिया में रहते हुए रूहानी जीवन भी बनाना है।

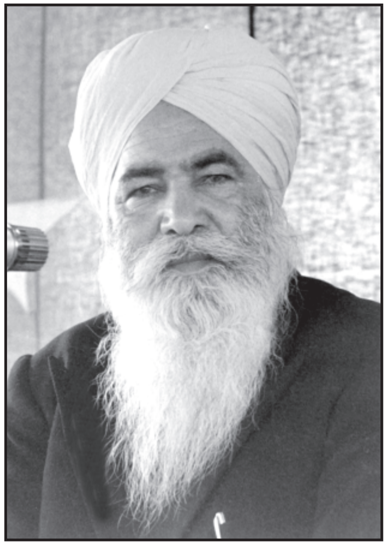

इस जगह के बारे में आप बहुत कुछ पढ़ चुके हैं और सुन चुके हैं। दयालु कृपाल ने अपनी दया करके यह जगह बनवाई। यह गरीब आत्मा जो आपके सामने बैठी है आपने खुद ही इसे यहाँ बिठाया और इसकी रखवाली की। आपकी रहमत इस जुबान से बयान नहीं की जा सकती। बेशक हम करोड़ों ही ग्रन्थ क्यों न लिख लें ! फिर भी आपकी महिमा बयान नहीं की जा सकती।

किसी पेड़ का फल खाने से ही उस पेड़ की अच्छाई का पता चलता है, जिन्होंने गुरु के हुक्म को माना होता है उन्हें उस स्वाद का पता होता है। जिन्हें 'नाम' मिला है उन सबको दयालु कृपाल ने तारना है क्योंकि आपने जिम्मेवारी ली है। आप अपने दरबार में उनकी इंतजार करते हैं। वही बहादुर है जो जीते जी गुरु की आज्ञा का पालन करते हैं।

U U U